CBSE Class 9 Hindi B Learning Outcomes 2021-22

कक्षा 9

सीखने- सखाने की प्र क्रया	सीखने के प्रतिफल
सभी वद्या र्थयों को समझते हुए सुननेए बोलने पढ़ने लखने और परिवेशीय सजगता को ध्यान में रखते हुए व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिए जाएँ ता क - • संगीत, लोक-कलाओं फल्म, खेल आदि की भाषा पर पाठ पढ़ने या कार्यक्रम के दौरान गौर से करने/सुनने के बाद संब धत गति व धयाँ कक्षा में हों। वद्या र्थयों को प्रेरित कया जाए क वे आस पास की ध्वनियों और भाषा को ध्यान से सुनें और समझें। • उन्हें इस बात के अवसर मलें क वे रे डयो और टेली वज़न पर खेल, फल्म एवं संगीत तथा अन्य गति व धयों से संब धत कार्यक्रम देखें/सुनें और उनकी भाषा, लय संचार-संप्रेषण पर चर्चा करें। • रे डयो और टेली वज़न पर राष्ट्रीय, सामाजिक चर्चाओं को सुनने/देखने और सुनाने/समझने तथा उन पर टिप्पणी करने के अवसर हों। • अपने आस-पास के लोगों की ज़रूरतों को जानने/समझने के लए उनसे साक्षात्कार और बातचीत के अवसर सुलभ हों, ऐसी गति व धयाँ पाठ्यक्रम का हिस्सा हों। • हिंदी के साथ-साथ अपनी भाषा की सामग्री पढ़ने- लखने (ब्रेल तथा अन्य संकेत भाषा में भी) और उन पर बातचीत की आज़ादी हो। • अपने अनुभवों को स्वतंत्र ढंग से लखने के अवसर हों। • अपने परिवेश, समय और समाज से संब धत रचनाओं को पढ़ने और उन पर चर्चा करने के अवसर हों। • अपनी भाषा गढ़ते हुए लखने की स्वतंत्रता हो। • स क्रय और जागरूक बनाने वाले स्त्रोत अखबार एवं पत्रिकाएँ .फल्म और अन्य श्रव्य-दृश्य (ऑ डयो-वी डयो) सामग्री को देखने व सुनने पढ़ने और लखकर अ भव्यक्त करने संबंधी गति व धयाँ हों। • कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को वक सत करने वाली गति व धयों, जैसे- अ भनय, भू म का निर्वाह (रोल-प्ले), क वता पाठ, सृजनात्मक लेखन, व भन्न	वद्यार्थी- • सामाजिक मुद्दों (जेंडरभेद, जाति भेद, व भन्न प्रकार के भेद) पर कार्यक्रम सुनकर/देखकर अपनी राय व्यक्त करते हैं। जैसे- जब सब पढ़ें तो पड़ोस की मुसकान क्यों न पढ़े? या मुसकान अब पार्क में क्यों नहीं आतीघ? • अपने आस-पड़ोस के लोगोंए स्कूली सहायकों या स्कूली सा थयों की आवश्यकताओ को कह और लख पाते हैं। • पाठ्यपस्तुक के अतिरिक्त नई रचनाओं के बारे में जानने/समझने को उत्सुक हैं और उन्हें पढ़ते हैं। • अपनी पसंद की अथवा कसी सुनी हुई रचना को पुस्तकालय या अन्य स्थान से ढूँढकर पढ़ने की को शश करते हैं। • समाचारपत्र, रे डयो और टेली वज़न पर प्रसारित होने वाले व भन्न कार्यक्रमों, खेल, फल्म, साहित्य-संबंध समीक्षाओं रिपोर्टों को दखेते, सनुते और पढ़ते हैं। • देखी-सुनी, सुनी-समझी, पढ़ी और लखी घटनाओ/रचनाओं पर स्पष्ट तया मौ खक एवं ल खत अ भव्य कत करते हैं। • दूसरों द्वारा कही जा रही बातों को धैर्य से सुनकर उन्हें समझते हुए अपनी स्पष्ट राय व्यक्त करते हैं। • अपने अनुभवोंए भावों और दूसरों की रायए व चारों को लखने की को शश करते हैं। जैसे- आँख बंद करके यह दुनिया, व्हीलचेयर से खेल मैदान आदि । • कसी सनुी, बोली गई कहानी, क वता अथवा अन्य रचनाओं को रोचक ढंग से आगे बढ़ाते हुए लखते हैं। • सामाजि क मुद्दों पर ध्यान देते हुए पत्र, नोट लेखन इत्यादि कर पाते हैं। • पाठ्यपुस्तकों में शा मल रचनाओं के अतिरिक्त, जैसे- क वता, कहानी, एकांकी, गद्य-पद्य की अन्य वधाओं को पढ़ते- लखते हैं और क वता की ध्वनि और लय पर ध्यान देते हैं।

स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हों तथा उनकी तैयारी से संबंधित स्क्रिप्ट (पटकथा) लेखन और रिपोर्ट लेखन के अवसर सुलभ हों। • अपने माहौल और समाज के बारे में स्कूल तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अपनी राय देने के अवसर हों। • कक्षा में भाषा-साहित्य की विविध छवियों/विधाओं के अंतरसंबंधों को समझते हुए उनके परिवर्तनशील स्वरूप पर चर्चा हो, जैसे - आत्मकथाएं जीवन, संस्मरण, कविता, कहानी, निबंध आदि। • भाषा-साहित्य के सामाजिक - सांस्कृति-सौंदर्यात्मक पक्षों पर चर्चा विश्लेषण करने के अवसर हों। • संवेदनशील मुद्दों पर आलोचनात्मक विचार विमर्श के अवसर होंए जैसे- जाति, धर्म, रीति-रिवाज़, जेंडर आदि। • कृषि, लोक-कलाओं, हस्त-कलाओं लघु-उद्योगों को देखने और जानने के अवसर हों और उनसे संबंधित शब्दावली को जानने और उनके उपयोग के अवसर हों। • कहानी, कविता, निबंध आदि विधाओं में व्याकरण के विविध प्रयोगों तथा उपागमों पर चर्चा के अवसर हों। • विद्यार्थी को अपनी विभिन्न भाषाओं के व्याकरण से तुलना/समानता देखने के अवसर हों। • रचनात्मक-लेखन, पत्र-लेखन, टिप्पणी, निबंध, अनुच्छेद आदि लिखने के अवसर हों।	• संगीतए फिल्म, विज्ञापनों खेल आदि की भाषा पर ध्यान देते हैं। जैसे- उपर्युक्त विषयों की समीक्षा करते हुए उनमें प्रयुक्त रजिस्टरों का उपयोग करते हैं। • भाषा-साहित्य की बारीकियों पर चर्चा करते हुए जैसे कुछ विशिष्ट शब्द-भंडार, वाक्य-संरचनाएं शैली संरचनाएं मौलिकता आदि । • लअपने आस-पास के रोज़ाना बदलते पर्यावरण पर ध्यान देते हैं तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए सचेत होते हैं। जैसेक- कल तक यहाँ पेड़ था, अब यहाँ इमारत बनने लगी। • अपने साथियों की भाषा, उनके विचार, व्यवहार, खान-पान, पहनावा संबंधी जिज्ञासा को कहकर और लिख कर व्यक्त करते हैं। • हस्त कलाएं वास्तुकलाएं खेतीबाड़ी के प्रति अपनी रुचि व्यक्त करते हैं तथा इनमें प्रयुक्त होने वाली भाषा को जानने की उत्सुकता रखते हैं। • जाति, धर्म, रीति-रिवाज़, जेंडर आदि मुद्दों पर प्रश्न करते हैं। • अपने परिवेश की समस्याओं पर प्रश्न तथा साथियों से बातचीत/चर्चा करते हैं। • सभी विद्यार्थी अपनी भाषाओं की संरचना से हिंदी की समानता और अंतर को समझते हैं।